68वें गणतंत्र दिवस पर निदेशक महोदय का संदेश

मेरे साथियों और प्यारे बच्चों,

आज हम अपने निदेशालय में देश का 68वां गणतंत्र दिवस मनाने के लिये एकत्रित हुये हैं। आपको मालूम है कि 67 वर्ष पूर्व आज के दिन हमारे देश का संविधान लागू हुआ था एवं हमारा देश गणराज्य बना था। इस शुभ अवसर पर मैं इस निदेशालय के मुखिया होने के नाते आप सभी को और आपके परिवार के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

इस निदेशालय में उच्चाधिकारियों से लेकर जिसम वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी, प्रशासनिक वर्ग के अधिकारी, उनका सहयोग करने के लिये प्रशासनिक और तकनीकी वर्ग के कर्मचारी, कुशल सहायी वर्ग के कर्मचारी और इनके साथ–साथ अस्थायी वर्ग के कर्मचारी, सुरक्षा–सफाई कार्य करने वाले मज़दूर अपनी सेवायें देते हैं और उन सबके सहयोग से यह निदेशालय आगे बढ़ता है। आपके परिवार के सदस्य भी बधाई के पात्र हैं क्योंकि वे भी कहीं न कहीं एक अहम भूमिका निभाते हैं जिनके सहयोग/समर्पण से आप सभी निदेशालय में अपनी सेवायें दे पाते ह।

67 वर्ष किसी भी देश के लिये एक लम्बी अवधि होती है। हम भारतवासियों ने विगत् वर्षों के इतिहास में अपनी परिपक्वता का परिचय देते हुये दुनिया के सामने एक सफल गणतांत्रिक व्यवस्था का उदाहरण प्रस्तुत किया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था ही किसी भी समाज और देश को आगे ले जाने के लिये सही नीति है – इस धारणा को हमने पुष्ट किया है।

सभी देशवासियों विशषतः सरकारी संस्थानों में कार्यरत सदस्यों का यह कर्तव्य बनता है कि इस उत्सव को हम धूमधाम से मनायें। आज आप सभी एक राष्ट्रीय अवकाश होने के बावजूद भी इस कार्यक्रम में उपस्थित हुये हैं, मैं आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। इस तरह के राष्ट्रीय पवो का आयोजन एक औपचारिकता मात्र नहीं है, बल्कि यह अवसर है आत्मावलोकन का जिसमें अपनी उपलब्धियों के साथ–साथ भविष्य में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिये विचार करना है।

मुझे आज लगातार पाचवें वर्ष निदेशालय के प्रांगण में राष्ट्रध्वज फहराने का अवसर प्राप्त हुआ और आपके समक्ष अपनी बात रखने का मौका मिला– यह मेरे लिये बड़े गर्व की बात है। मैंने हर गणतंत्र दिवस के मौके पर निदेशालय में रहते हुये इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया है और आपके सामने निदेशालय की उपलब्धियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है। आज भी मैं आपके समक्ष पिछले वर्ष की उपलब्धियों की चर्चा करना चाहूंगा।

पांच वर्ष पूर्व हमने खरपतवार अनुसंधान के क्षेत्र में 5 नये कार्यक्रम प्रारंभ किये थे। इन कार्यक्रमों को एक व्यवस्थित और बहुआयामी तरीके से चलाने का निश्चय किया था। वर्तमान मे इन कार्यक्रमों का अंतिम वर्ष चल रहा है, अर्थात् 31 मार्च, 2017 को यह कार्यक्रम संपूर्ण हो जायेंगे और उनकी उपलब्धियों के आधार

पर नये कार्यक्रम शुरू किये जायेंगे जिसकी रूपरेखा तैयार करने के लिये संबंधित सभी वैज्ञानिकों को काफी समय पहले से सचेत कर दिया गया है।

पिछले वर्षों में क्या उपलब्धियां हुई उनका समय–समय पर हम विश्लेषण करते आ रहे हैं, वर्तमान में भी यह प्रक्रिया चल रही है और आगे भी जारी रहेगी। हमने अपनी अखिल भारतीय खरपतवार प्रबंधन परियोजना को और भी कारगर ढंग से चलाने के लिये प्रभावी कदम उठाये थे। इसमें जितनी सफलता मिली उसका भी आंकलन हम करते आ रहे हैं। अगले माह होने वाली वार्षिक समूह बैठक में विस्तार से चर्चा की जायेगी।

हमारा जो 'संरक्षित खेती में खरपतवार प्रबंधन' एक फ्लेगशिप कार्यक्रम चल रहा है, जिसने भी उल्लेखनीय प्रगति की है, जिसमें हमारी एक अलग पहचान बनती जा रही है। जब हमारी इस कार्यक्रम के लिये सराहना की जाती है, तो बड़े गर्व का अनुभव होता है। हमारा ऑन–फार्म रिसर्च का कार्यक्रम भी पिछले 5 वर्षों से चल रहा है हर वर्ष कुछ नया अनुभव प्राप्त हो रहा है और यह कार्यक्रम नई उचाईयो को छूता जा रहा है।

अपने अनुसंधान के कार्यक्रमों के अलावा प्रचार/प्रसार के कार्यों में भी हमने प्रगति की है। गाजरघास जागरूकता सप्ताह, पाचवां राष्ट्रीय खरपतवार प्रशिक्षण कार्यक्रम, तीसरा विद्यार्थियों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम, हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड लिमिटेड के सहयोग से कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, विश्व मृदा दिवस, कृषि शिक्षा दिवस, स्थापना दिवस, प्रगतिशील किसानो एवं अधिकारियों/वैज्ञानिकों के साथ अन्तराफलक बैठक एवं उद्योग दिवस आदि का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया है। इसके साथ–साथ अनेक बैठकों का आयोजन भी किया गया जिनमें अनुसंधान सलाहकार समिति, संस्थान अनुसंधान समिति, संस्थान प्रबंधन समिति एवं अखिल भारतीय खरपतवार प्रबंधन योजना की समूह बैठक आदि सम्मिलित है।

12वीं पंचवर्षीय योजना में जो भी बजट हमें प्राप्त हुआ उसका समुचित उपयोग कर निदेशालय की सुविधाओं को और मज़बूत किया गया है। आधारिक संरचना जो जर्जर हालत में पड़ी हुई थी, चाहे हमारे नेट हाउस, पॉली हाउस, फार्म शेड, फील्ड लेबोरेट्री, परिसर की सड़के इत्यादि उनका सुधार कार्य करवाया गया है, और हमारी बहुप्रतीक्षित मांग – एक अच्छा अतिथिगृह, जिसका निर्माण कार्य भी शुरू हो चुका है।

निदेशालय के सभी वर्ग के सदस्यों के लिये आगे बढ़ने के समुचित अवसर प्रदान किये गये हैं। सभी अधिकारियों/कमचारियों को स्किल डेवलपमेंट कार्यक्रम में प्रशिक्षण हेतु भेजा गया है, ताकि व अपनी प्रतिभाओं को और अच्छे ढंग से उजागर कर सकें। वैज्ञानिकों, तकनीकी और प्रशासनिक वर्ग के लोगों की असेसमेंट के प्रकरण को भी पूरा लिया गया है और मेरे विचार में किसी भी कर्मचारी/अधिकारी का कोई प्रकरण लंबित नही है।

हम यह बड़े गर्व से कहते हैं कि हमारा निदेशालय छोटा लेकिन सुंदर है। हर प्रकार की सुविधाओं से परिपूर्ण ह, यहां किसी भी प्रकार की सुविधा की कोई कमी नही है। मैं कई अन्य संस्थानों में जाता रहता हूं, वहां के कर्मचारी कई सुविधाओं से वंचित हैं यहां तक कि वेतन भी समय से नही मिलता या आधा–अधूरा मिलता है। अनुसंधान के लिये आवश्यक मूलभूत क्षेत्र सुविधायें जैसे ट्रैक्टर, पानी, उपकरण, बीज, खाद आदि भी उपलब्ध नहीं है। उनके मुकाबले हम इस निदेशालय में 1000 गुना अधिक सुविधा सम्पन्न है। अतः हमारा भी यह कर्त्तव्य बनता है कि वर्ष के अत में जब उपलब्धियां की गणना हो तो उन्हे दिखाने के लिये कुछ गुणवत्ता युक्त परिणाम सभी के पास हो।

निदेशालय में वैज्ञानिकों की संख्या लगातार कम होती जा रही है, जिसको भरने में अभी तक कोई सफलता नही मिली ह किन्तु हमारे प्रयास जारी हैं, आने वाले समय में नये वैज्ञानिक इस निदेशालय को मिलेंगे।

इस निदेशालय की राष्ट्रीय स्तर पर खरपतवार अनुसंधान के क्षेत्र में पहचान बनाने में हमने अनुसंधान प्रकाशनों पर विशेष बल दिया ह। यह अपने आप में विश्लेषण का ही नही बल्कि शोध का विषय है कि खरपतवार अनुसंधान निदेशालय प्रकाशनों के मामले में इतना पीछे क्यों है? हमने प्रयास किया कि हमारे निदेशालय के वैज्ञानिक भी राष्ट्रीय पुरस्कारों हेतु अपनी दावेदारी प्रस्तुत करें और निदेशालय भी राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत हो। मुझे प्रतीत होता है कि इस स्तर पर पहुंचने के लिये और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है।

आज के इस अवसर पर मैं आपसे फिर आह्वान करता हूं कि अपने कर्त्तव्यों को समझें– जरा सोचें कि यह देश हमारे लिये कितना कुछ कर रहा है और हम बदले में देश को क्या दे रहे हैं? हम सबकी यह कोशिश होनी चाहिये कि जितना हमें मिल रहा है उससे ज्यादा दे कर जायें। यह न सोचें हमें क्या मिला है, बल्कि यह सोचें किया क्या है अर्पण।

आने वाले कुछ दिनों में हमारे निदेशालय में कुछ विशिष्ट अतिथियों का आगमन हाने वाला है 28–30 जनवरी, 2017 का भा.कृ.अनु.प. के पूर्व उप महानिदेशक (एन.आर.एम.) आने वाले है, उसके बाद 7–8 फरवरी, 2017 को भा.कृ.अनु.प. के महानिदेशक का कार्यक्रम निश्चित हुआ है। हम सबकी यही कोशिश होनी चाहिये कि उनका आगमन स्मरणीय बनाये क्योंकि ऐसे विशिष्ट अतिथियों का 5–10 वर्षों में एक बार आगमन होता है और जो छवि वे अपने मन में लेकर जाते हैं उसका प्रभाव लम्बे समय तक रहता है।

अंत में मैं फिर आप सभी का अभिनंदन करता हूं और आशा करता हूं कि अगले आने वाले वर्ष में हम और अच्छा काम करके दिखायेंगे, अपने निदेशालय को और अपने दश को और ऊंचाइयों पर ले जायेंगे।

जय हिन्द।